अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

"सूरदास जी के काव्य में वात्सल्य वर्णन "

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

हिन्दी साहित्य के आलो कत सूर्य ,सन्त काव्य धारा के शरोम ण महाक व सूरदास जी का नाम सदैव स्वर्ण अक्षरों में दीप्ति युक्त रहेगा ।सूरदास की जन्मति थ एवं जन्मस्थान के वषय में वद्वानों में मतभेद है। "साहित्य लहरी' सूर की लखी रचना मानी जाती है। इसमें साहित्य लहरी के रचना-काल के सम्बन्ध में निम्न पद मलता है -

मुनि पुनि के रस लेख । दसन गौरीनन्द को ल ख सुवल संवत् पेख ।।

इसका अर्थ संवत् 1607 व० माना जाता है, अतएवं "साहित्य लहरी' का रचना काल संवत् 1607 व० है। इस ग्रन्थ से यह भी प्रमा णत होता है क सूर के गुरु श्री बल्लभाचार्य थे। इस आधार पर सूरदास का जन्म सं० 1535 व० के लगभग ठहरता है, क्यों क बल्लभ सम्प्रदाय की मान्यता है क बल्लभाचार्य सूरदास से दस दिन बड़े थे और बल्लभाचार्य का जन्म उक्त संवत् की वैशाख् कृष्ण एकादशी को हुआ था। इस लए सूरदास की जन्म-ति थ वैशाख शुक्ला पंचमी, संवत् 1535 व० समीचीन मानी जाती है। उनकी मृत्यु संवत् 1620 से 1648 व० के मध्य मान्य है।सूरदास के पता का नाम पं डत रामदास था जो सारस्वत ब्राह्मण थे और माता का नाम जमुनादास था।सूरदास वल्लभाचार्य के शष्य थे तथा अष्टछाप के क वयों में सर्वप्रमुख थे ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के मतानुसार सूरदास का जन्म संवत् 1540 व० के सन्निकट और मृत्यु संवत् 1620 व० के आसपास मानी जाती है। 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' के आधार पर उनका जन्म रुनकता अथवा रेणु का क्षेत्र (वर्तमान जिला आगरान्तर्गत) में हुआ था। मथुरा और आगरा के बीच गऊघाट पर ये निवास करते थे। बल्लभाचार्य से इनकी भेंट वहीं पर हुई थी। "भावप्रकाश' में सूर का जन्म स्थान सीही नामक ग्राम बताया गया है। वे सारस्वत ब्राह्मण थे और जन्म के अंधे थे। "आइने अकबरी' में (संवत् 1653 व०) तथा "मुतखबुत-तवारीख' के अनुसार सूरदास को अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में माना है।

सूरदास जी द्वारा ल खत पाँच ग्रन्थ माने जाते हैं:

(1) सूरसागर - जो सूरदास की प्र सद्ध रचना है। जिसमें सवा लाख पद संग्रहित थे। कंतु अब सात-आठ हजार पद ही मलते हैं।

(2) सूरसारावली

(3) साहित्य-लहरी - जिसमें उनके कूट पद संक लत हैं।

(4) नल-दमयन्ती

(5) ब्याहलो

उनके काव्य में प्रेम की अपार व्यापकता और व वधता है। यहीं मानवीय प्रेम ईश्वरीय प्रेम या भक्ति के रूप में भी व्यक्त हुआ है। ।सूरदास जी के काव्य की सर्वोपरि वशेषता उनका वात्सल्य वर्णन है ।उनका वात्सलय वर्णन मनोवैज्ञानिक और मा र्मक है। अपने बाल वर्णन में उन्होंने कृष्ण जन्म से लेकर उनके कशोर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

होने तक की व भन्न स्थितियों का वर्णन कया है। कृष्ण की बाल लीलाएँ और बाल क्रीडाएँ सूरदास के काव्य का महत्त्वपूर्ण अंश है। सूर के वात्सल्य वर्णन में स्वाभा वकता, व वधता, रमणीयता, एवं मा र्मकता है जिसके कारण वे वर्णन अत्यंत ह्रदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ ह्रदय का ऐसा स्वाभा वक, सरल और ह्रदय ग्राही चत्र खींचा है क आश्चर्य होता है। वात्सल्य के दोनों पक्षों संयोग एवं वयोग का हिन्दी काव्य को छोड़कर अन्य भाषाओं में भी ऐसा सरस स्वाभा वक तथा सर्वांगीण वात्सल्य वर्णन अन्यत्र कहीं पर भी दर्शनीय नहीं है ।वात्सल्य क्षेत्र में कोई कोना ऐसा नहीं है जिसका स्पर्श सूर काव्य में नहीं कया गया है ।सूरदास जी वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते हैं। उन्होंने श्रृंगार और शान्त रसों का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन कया है।सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की अनुपम नि ध हैं।सूरदास जी वात्सल्य वर्णन अ वश्वसनीय है।जो भाव ‘ शशु संबंधी प्रेम’ या ‘संतान प्रेम’ अर्थात वात्सल्य नामक स्थायी भाव को जाग्रत करता है, उसे ‘वात्सल्य रस’ माना जाता है। इसमें शशु के पालने से उत्पन्न प्रेम की अ भव्यक्ति होती है।वात्सल्य रस काफी हद तक श्रृंगार रस की भांति प्रतीत होता है और उसी प्रकार इसके दो भेद भी बताए गए हैं वात्सल्य रस के दो प्रकार हैं:संयोग वात्सल्य, वयोग वात्सल्य।जहाँ संयोग रूप में स्नेह उमड़ता है वहां संयोग वात्सल्य रस होता है।जहाँ वयोग रूप में प्रेम, अनुराग उमड़ता है वहाँ वयोग वात्सल्य रस होता है। वात्सल्य के दोनों पक्षों संयोग एवं वयोग का चत्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है। वात्सल्य के संयोग पक्ष में उन्होंने एक और तो बालक कृष्ण के रूप मधुरी का चत्रण कया है तो दूसरी ओर बालो चत चेष्टओं का मनोहारी वर्णन कया है। वात्सल्य के दोनों पक्षों संयोग एवं वयोग का चत्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है। रामचंद्र शुक्ल ने लखा है :-बाल सौंदर्य एवं स्वभाव के चत्रण में जितनी सफलता सुर को मली है उतनी अन्य कसी को नहीं वह अपनी बंद आंखों से वात्सल्या का कोना कोना झांक आए हैं। भन्न- भन्न वद्वानों ने वात्सल्य’ को परिभा षत कया है

अ भनव गुप्त के मतानुसार :

वात्सल्य भाव मात्र है और उसकी रस रूप में स्वतंत्र सत्ता नहीं मानी जानी चाहिए।

आचार्य मम्मट के अनुसार - ‘‘ जिस रस का स्थायी भाव स्नेह हो उसकी प्रेयांस कहते हैं और इसी का नाम वात्सल्य है।

हिन्दी साहित्यकोश (भाग - एक) के अनुसार : ‘’ वात्सल्य शब्द ‘ वत्स ’ से व्युत्पन्न और पुत्रादि वषयक रति का पर्याय है।

प्राचीन आचार्यों ने ‘ वात्सल्य रस ’ न लखकर ‘ वत्सल रस ’ लखा है और वात्सल्य को इसका स्थायी भाव माना है।

आचार्य भोजराज के अनुसार , रसराज सद्ध करने के प्रसंग में अन्य रसों की गणना करते हुए उनकी संख्या ‘ वात्सल्य रस ’ को मलाकर दस मानी जा सकती है ।इससे ज्ञात होता है क उनके समय तक नौ रसों के समकक्ष वत्सल को भी मान्यता प्राप्त हो चुकी थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

भगवान श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का का वर्णन करते हुए सूरदास जी कहते हैं क नंद बाबा के यहाँ श्रीकृष्ण के रूप में नौ नि धयों ने प्रवेश कया है ।बालक कृष्ण की बाल लीलाओं पर प्रकाश डालते वे कहते हैं क उनके मस्तक पर मुकुट,कानों में म णयों के कुंडल ,तन पर पीताम्बर ,शरीर पर चार भुजाएँ अत्य धक सुशो भत हो रही है ।उनके जन्मोत्सव पर नंद बाबा के घर पर ताल ,मृदंग, आदि मधुर यन्त्र बज रहे हैं ।द्वारों पर बंदनवार सजी हुई है ।बालक कृष्ण पर हल्दी -दही का छिड़काव कया जा रहा है ।सभी आपस में प्रेम पूर्वक मल रहे है और बाबा आनंद आनंदित होकर दान देते हुए ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे हैं।इसी जन्मोत्सव से उत्पन्न आनंद का चत्रण करते हुए सूरदास जी कहते हैं-

"…नंदराइ कैं नवनि ध आई।
माथे मुकुट, स्रवन मनि-कुंडल, पीत बसन, भुज चारि सुहाई।
बाजत ताल-मृदंग जंत्र-गति, चर च अरगजा अंग चढ़ाई।
अच्छत दूब लये रि ष ठाढ़े, बारिनि बंदनवार बँधाई।
छिरकत हरद दही, हिय हरषत, गरत अंक भरि लेत उठाई।
सूरदास सब मलत परस्पर, दान देत नहिं नंद अघाई।"

बालक कृष्ण के रूप सौंदर्य के समक्ष करोड़ों कामदेवों की सुन्दरता को न्योछावर कया जा सकता है श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य को देखकर गो पकाएँ मन ही मन वचार करती है क ऐसा यशोदा ने क्या पुण्य कर्म कया था जिसके फलस्वरूप उसे भगवान श्रीकृष्ण की प्राप्ति हुई है ।भगवान श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य के समक्ष संसार के करोड़ों चन्द्रमा ,सूर्य और मनुष्य की आँखों की चमक भी तुच्छ है ।गो पकाएँ कृष्ण के रूप सौन्दर्य पर इतनी आक र्षत है क ये सभी यशोदा से कृष्ण को अपनी गोद में लेने की हठ करती है ।इसी रूप -सौन्दर्य का वर्णन करते हुए क व कहता है क :-

"नैंकु गोपालहिं मोकौं दै री ।
देखौं बदन कमल नीकैं करि, ता पाछैं तू कनियाँ लै री ॥
अति कोमल कर-चरन-सरोरुह, अधर-दसन-नासा सोहै री |
लटकन सीस, कंठ मनि भ्राजत, मनमथ कोटि बारने गै री ॥
बासर-निसा बिचारति हौं स ख, यह सुख कबहुँ न पायौ मै री ।
निगमनि-धन, सनकादिक-सरबस, बड़े भाग्य पायौ है तैं री ।
जाकौ रूप जगत के लोचन, कोटि चंद्र-रबि लाजत भै री ।
सूरदास ब ल जाइ जसोदा गो पनि-प्रान, पूतना-बैरी"

सूरदास जी ने कृष्ण की भाव-भं गमाओं और चेष्टाओं का जितना सुन्दर अंकन कया है वह अप्रतिम है ।यशोदा बालक कृष्ण को लाड़-दुलार करती है ।उसे सुलाने के लए पालने में झुलाती है ।जो सुख देवताओं और मुनियों के लए भी दुर्लभ है, वही कृष्ण को बालरूप में पाकर लालन-पालन और प्यार करने का सुख श्रीनंद की पत्नी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

यशोदा प्राप्त कर रही हैं।यशोदा कृष्ण को सुलाने के लए उसे पालने में झुलाती है ।पालने में झुलाते हुए दुलार-प्यार से लोरी गाते हुए अपने प्रेम की अ भव्यक्ति करती है।यथा:-

"जसोदा हरि पालनैं झुलावै। हलरावै, दुलरावै मल्हावै, जोइ-जोइ कछु गावै॥ मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै। तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै॥ कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै। सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै॥ इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै। जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नंद-भा मनि पावै॥"

रस एवं भाव चत्रण के अन्तर्गत सूरदास जी ने श्री कृष्ण के व भन्न रूपों का ह्रदयस्पर्शी चत्रण कया है ,उसकी मशाल संसार के अन्य साहित्य में दुर्लभ हैं ।सूर के काव्य में वात्सल्य वर्णन में बाल क्रीड़ाओं,बाल -चेष्टाओं व बाल मनो वज्ञान का सहज -व्यापक चत्रण बड़ा ही मा र्मक व मनोहारी हुआ है ।

मुख पर दही लपटा है, उनके कपोल (गाल) सुंदर तथा नेत्र चपल हैं। ललाट पर गोरोचन का तिलक लगा है। बालकृष्ण के बाल घुंघराले हैं। जब वह घुटनों के बल माखन लए हुए चलते हैं तब घुंघराले बालों की लटें उनके कपोल पर झूमने लगती है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो भ्रमर मधुर रस का पान कर मतवाले हो गए हैं। उनके इस सौंदर्य की अ भवृ द्ध उनके गले में पड़े कठुले (कंठहार) व संह नख से और बढ़ जाती है। सूरदास कहते हैं क श्रीकृष्ण के इस बालरूप का दर्शन यदि एक पल के लए भी हो जाता तो जीवन सार्थक हो जाए। अन्यथा सौ कल्पों तक भी यदि जीवन हो तो निरर्थक ही है।

"सो भत कर नवनीत लए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन मं डत मुख द ध लेप कए॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पए॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रु चर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए॥"

बालक श्रीकृष्ण बाबा नन्द के घर आँगन में कलकारियाँ मारते हुए घुटनों के बल चल रहे हैं ।राजा नंद के घर का आंगन जो सोने से सुसज्जित था उस में अपने प्रतिबिंब को पकड़ने के लए दौड़ते हैं ।अपनी प्रतिबिंब को देखकर के कलकारियाँ मारते हुए हँसते हैं।

सोने की भू म पर बालक कृष्ण के हाथ पाँव की परछाई देखकर यह उपमा अत्य धक सुशो भत हो रही है मानो पृथ्वी ने प्रत्येक कदम पर कृष्ण के बैठने के लए प्रत्येक म ण में कमल आसन प्रकट कर दिया है। माँ यशोदा बाल कृष्ण की बाल वनोद क्रयाएँ देखकर भावुक हो जाती है और राजा नंद को बारम्बार कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं को दिखाने के लए पुकारने लग जाती ।इसी का भाव पूर्ण चत्र प्रस्तुत करते हुए क व सूरदास जी कहते हैं क:-

" कलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

मनिमय कनक नंद के आँगन, बिम्ब पकरिबैं धावत॥
कबहुँ निर ख हरि आप छाँह कौ, कर सौ पकरन चाहत।
कल क हँसत राजत है दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत
कनक-भू म पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निर ख जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अचरा तर लै ढाँ क, सूर के प्रभु को दूध पयावति॥

माँ यशोदा अपने बालक कृष्ण को लेकर मन में तरह तरह की कल्पनाएं करती हैं ।वह भी दूसरी माताओं की तरह सोचती है क कब उसका बच्चा घुटनों के बल चलेगा ,कब अपने तोतली -तोतली भाषा भाषा में मधुर वाणी से उसे माँ कहकर पुकारेंगे ।कब वह तोतली भाषा में राजा नंद को बाबा कहकर पुकारेंगे ।कब वह उसे मीठी मीठी लोरियाँ गाकर सुनाएगी।आज माँ यशोदा बालक कृष्ण को चलते हुए देखतीं है तो प्रसन्नता से झूमने लगती है ।मन की कल्पनाओं को यथार्थ में देखकर वह अत्य धक भाव - वभोर हो जाती है ।सूरदास जी इसी भाव को चत्रित करते हुए कहते हैं:

“कान्ह चलत पग द्वै-द्वै धरनी |
जो मन मैं अ भलाष करति ही, सो देखति नँद-घरनी ||
रुनुक-झुनुक नूपुर पग बाजत, धुनि अतिहीं मन-हरनी |
बैठि जात पुनि उठत तुरतहीं सो छबि जाइ न बरनी ||
ब्रज-जुवती सब दे ख थ कत भइँ, सुंदरता की सरनी |
चरजीवहु जसुदा कौ नंदन सूरदास कौं तरनी ||”

बालक कृष्ण की बाल हठ क्रीड़ाओं का सूर ने बड़ा ही मनोवैज्ञानिक वर्णन कया है ।बालक कृष्ण जब आकाश में चमकते चाँद को देखते हैं तो ये माता से ज़िद करते हैं वहीं चन्द्र खलौना चाहिए जो आकाश में चमक रहा है ।माता यशोदा उन्हें समझाने का प्रयास करती हैं ले कन वे अपनी बाल हठ नहीं छोड़ते हैं ,अ पतु उ चत अनु चत की परवाह न करते हुए कहते हैं क यदि इन्हें चन्द्र खलौना नहीं प्राप्त हुआ तो वे धरती पर लेट जाएँगे और माता से रुष्ट हो जाएंगे ।इसी पर बाल हठ पर प्रकाश डालते हुए क व सूरदास जी कहते हैं:

“लहौंगौ मैया री मैं चंद लहौंगौ ।
कहा करौं जलपुट भीतर कौ, बाहर ब्यौं क गहौंगौ ॥
यह तौ झलमलात झकझोरत, कैसैं कै जु लहौंगौ ?
वह तौ नपट नकटहीं देखत ,बरज्यौ हौं न रहौंगौ ॥
तुम्हरौ प्रेम प्रगट मैं जान्यौ, बौराएँ न बहौंगौ ।
सूरस्याम कहै कर गहि ल्याऊँ स स-तन-दाप दहौंगौ ॥”

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

गो पकाएँ बाल गोपाल को माखन चोर कहती हैं। माँ यशोदा को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती क कोई उसके बाल गोपाल को माखन चोर कहकर पुकारे ,तभी बालक कृष्ण अपनी माता यशोदा को कहता है की माँ वह माखन की चोरी नहीं करता वो तो गो पकाएँ ही उसे अपने घर में बुलाकर माखन खाने के लए मजबूर कर देती है।माॅं यशोदा को गो पकाओं पर ग़ुस्सा आता है और वात्सल्य भाव में खरी -खोटी सुनाती है ।बालकृष्ण यशोदा माँ को कहता है क मैं छोटी बाँहों से कैसे ऊँचे छींके से माखन उतार सकता हूँ?स्वयं जबरन मुझे खलाती है,अपने आपको निर्दोष सद्द करते हुए कृष्ण तर्क देते हुए मैया यशोदा को सफ़ाई देते हुए कहते हैं:-

"मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो ।
चार पहर बंसीबट भटक्यों, साँझ परे घर आयो ।।
मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको कहि बि ध पयो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।"

दूसरी तरफ़ गो पकाएँ माता यशोदा को कृष्ण की शकायत भी करती हैं व आपस में सभी गो पकाएँ कृष्ण के माखन चोरी की आपस में बात करती है क

चोरि माखन खात
चली ब्रज घर घरनि यह बात।
नंद सुत संग सखा लीन्हें चोरि माखन खात॥
कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहिं पैठे धाइ।
कोउ कहति मोहिं दे ख द्वारें उतहिं गए पराइ॥
कोउ कहति कहि भांति हरि कों देखौं अपने धाम।
हेरि माखन देउं आछो खाइ जितनो स्याम॥
कोउ कहति मैं दे ख पाऊं भरि धरौं अंकवारि।
कोउ कहति मैं बां ध राखों को सकैं निरवारि॥
सूर प्रभु के मलन कारन करति बु द्ध वचार।
जोरि कर बि ध को मनावतिं पुरुष नंदकुमार॥

बच्चे-बच्चे ही होते हैं ।ज़्यादातर बच्चों को दूध पीना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता ।कृष्ण भी उनमें में से एक है,जिसे दूध पीना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है । माँ यशोदा अपने बच्चे को दूध पलाने के लए तरह तरह की मनगढ़ंत क़स्से कृष्ण के समक्ष प्रस्तुत करती है ।यशोदा कहती हैं क यदि तुम दूध पओगे तो तुम्हारी चोटी तुम्हारे भाई बलराम की तरह बड़ी हो जाएगी ।बालक कृष्ण माँ यशोदा की बातों में आ जाता है और वह तीन-चार दिन लगातार दूध पीता है ,कुछ दिनों के बाद फर वह दूध पीना छोड़ देता है तो माँ यशोदा उसे पुनः समझाने का प्रयास करती है ।बालक माॅं यशोदा से मासू मयत के साथ कहता है की माँ तीन चार दिन मैंने दूध

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

लगातार दूध पया है ।मेरी चोटी तो वैसी की वैसी ही है ।यह बलराम भैया दाऊ की तरह की तरह क्यों नहीं लम्बी हो रही है ।बताओ मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी ।माँ कृष्ण के भोलेपन पर मोहित जाती है|

सूरदास जी ने बालक श्रीकृष्ण की जितनी मनमोहक क्रीड़ाएँ व चेष्टाओं की सुन्दर प्रस्तुत की है उसे देखकर कोई भी यह कह सकता है क सूरदास जी को माता का हृदय प्राप्त था । सूर ने बालक कृष्ण के वात्सल्य भाव की बड़ी ही सूक्ष्म -सुंदर- मनमोहक अ भव्यक्ति प्रस्तुत की है ।माँ यशोदा बालक कान्हा की सभी बाल सुलभ गति व धयों को निहारती हैं तब माॅ यशोदा को जिस सुख की प्राप्ति होती हैं,उसके समक्ष संसार के सभी सुख गौण है।कभी कभी जब बालक श्रीकृष्ण व्याकुल प्रतीत होते है या कभी दूध नहीं पीते हैं तब यशोदा माॅ को यहीं भ्रम होता है कहीं उसके बच्चे को कसी की नज़र लग गई हैं ।माँ तो माँ होती है चाहे वह साधारण बच्चे की माँ हो या बालक श्रीकृष्ण की माँ हो ,माँ का दिल माँ का होता है ।यशोदा अपने बच्चे के लए वहीं अनुभव करती है जो सामान्य बच्चे की माँ अपने बच्चे के लए अनुभव करती है ।बच्चे रोटी का स्वाद चखने पर दूध से जी चुराने लगते है ।यहीं बालक कृष्ण के साथ हुआ ।माँ यशोदा कृष्ण को चोटी बढ़ाने का लालच देकर दूध पलाने का प्रयास करती है। मैया मेरी चोटी तो वैसी की वैसी है ,बलराम की तरह लम्बी व मोटी नहीं हो रही है ।बालक कृष्ण की सरलता-स्वाभा वकता का चत्रण प्रस्तुत करते हुए क व कहते है:

“मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी
कतीबार मोहि दूध पयत भई, यह अजहुँ है छोटी।
तू जो कहती बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटि।”

गो पकाएँ बाल गोपाल को माखन चोर कहती हैं। माँ यशोदा को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती क कोई उसके बाल गोपाल को माखन चोर कहकर पुकारे ,तभी बालक कृष्ण अपनी माता यशोदा को कहता है की माँ वह माखन की चोरी नहीं करता वो तो गो पकाएँ ही उसे अपने घर में बुलाकर माखन खाने के लए मजबूर कर देती है।माॅ यशोदा को गो पकाओं पर ग़ुस्सा आता है और वात्सल्य भाव में खरी -खोटी सुनाती है ।बालकृष्ण यशोदा माँ को कहता है क मैं छोटी बाँहों से कैसे ऊँचे छींके से माखन उतार सकता हूँ?स्वयं जबरन मुझे खलाती है,अपने आपको निर्दोष सद्द करते हुए कृष्ण तर्क देते हुए मैया यशोदा को सफ़ाई देते हुए कहते हैं:-

"मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो ।
चार पहर बंसीबट भटक्यों, साँझ परे घर आयो ।।
मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको कहि बि ध पयो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।”

दूसरी तरफ़ गो पकाएँ माता यशोदा को कृष्ण की शकायत भी करती हैं व आपस में सभी गो पकाएँ कृष्ण के माखन चोरी की आपस में बात करती है क

चोरि माखन खात
चली ब्रज घर घरनि यह बात।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

नंद सुत संग सखा लीन्हें चोरि माखन खात॥
कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहिं पैठे धाइ।
कोउ कहति मोहिं दे ख द्वारें उतहिं गए पराइ॥
कोउ कहति कहि भांति हरि कों देखौं अपने धाम।
हेरि माखन देउं आछो खाइ जितनो स्याम॥
कोउ कहति मैं दे ख पाऊं भरि धरौं अंकवारि।
कोउ कहति मैं बां ध राखों को सकैं निरवारि॥
सूर प्रभु के मलन कारन करति बु द्ध वचार।
जोरि कर बि ध को मनावतिं पुरुष नंदकुमार॥

मा यशोदा बालक कृष्ण के मन को आनंद प्रदान करने के उद्देश्य से उसे ग्वालों के साथ मनोरंजन हेतु वन में भेजती है ।बालक कृष्ण ग्वालों के साथ वन में जाता है तो ग्वाले कृष्ण से गाय चराने के लए कहते हैं।कृष्ण बार -बार गाय को पकड़ने के लए दौड़ता है ,जिससे उसके पाँव में पीड़ा होने लगती है ।वह घर आकर मा यशोदा से ग्वालों की शकायत करता है तो माँ को ग्वालों पर बहुत ग़ुस्सा आता है क्यों ग्वालों ने उसके नन्हें बच्चे नन्हें से इतना काम करवाया? क्यों इसे इतनी दौड़ाया ? माँ यशोदा वात्सल्य भाव से भर उठती है और ग्वालों से नाराज़ होकर मीठी मीठी डाट-फटकार सुनाती है ।यशोदा नहीं चाहती क कृष्ण वन जाए परन्तु कृष्ण के मन को देखते हुए वह उसे वन भेजने को तैयार हो जाती हैं ।सूरदास कहते हैं क जब श्यामसुंदर गौओं को चराकर आए तो यशोदा ने उनकी बलैयां लीं।इसी वात्सल्य भाव का वर्णन करते हुए कहते है क

“आजु हरि धेनु चराए आवत।
मोर मुकुट बनमाल बिराज पीतांबर फहरावत॥
जिहिं जिहिं भांति ग्वाल सब बोलत सुनि स्त्रवनन मन राखत।
आपुन टेर लेत ताही सुर हरषत पुनि पुनि भाषत॥
देखत नंद जसोदा रोहिनि अरु देखत ब्रज लोग।
सूर स्याम गाइन संग आए मैया लीन्हे रोग॥”

निष्कर्ष यह है क भक्तिकाल का वात्सल्य वर्णन भक्तिकाल को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान है ।भारतीय संस्कृति में मातृत्व रूप पूजनीय एवं वन्दनीय है ।माता यशोदा के वात्सल्य का अनूठा व गौरवशाली चत्रण प्रस्तुत करने में सूर रचनाएँ हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर है।

सूर का हृदय ममत्व का अथाह सागर था जिसमें प वत्रता, निश्छलता, निर्मलता की लहरें काव्य भाषा बनकर निःसृत हुई। सूर काव्य में माँ को लौ कक धरातल पर प्रस्तुत करने का प्रयास कया गया है ।सूर की हृदयता ही तो उसके वात्सल्य वर्णन के रूप में प्रकट हुई हैं। सूरसागर इन्हीं प वत्र लहरियों का महासागर है।सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य में ही नहीं अ पतु वश्व साहित्य में भी सर्वश्रेष्ठ है ।सूरदास जी की रचनाओं में बाल क्रीड़ाओं का सजीव-स्वाभा वक चत्रण देखकर यही कहा जा सकता है क सूर ही वात्सल्य है और वात्सल्य

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

ही सूर है ।सूरदास जी की रचनाएँ सार्वभौ मक -सार्वका लक है ।सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता,स्वाभा वकता,मनोवैज्ञानिकता ,सहजता व सरलता मे हृदय को आकृष्ट करने की क्षमता है ।मनोवृत्तियों के कुशल चतेरे सूरदास जी बंद आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झांक आए है।निस्संदेह सूर जी का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य जगत की अमूल्य नि ध है ।

डॉ कामना कौ शक
सह प्रवक्ता हिन्दी
वैश्य महा वद्यालय भवानी

सम्बन्धित पाठ्य पुस्तक :-

1)सूरसागर:सूरदास
2)सूर सारावली:सूरदास
3)साहित्य लहरी:सूरदास
4)हिन्दी साहित्य का इतिहास: शुक्ल आचार्य रामचंद्र BBA
5)हिन्दी साहित्य का प्राचीन इतिहास:-श्री वास्तव,डॉ राजेश